શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

सा विद्या या विमुक्तये

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર हिन्दी   ४   ગામ: ____________

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧)	आदेय
(૨)	परमात्मा
(૩)	शक्तिमान
(૪)	धर्मनाथ
(૫)	सौम्यप्रकृति
(૬)	काउसग्ग
(૭)	तत्त्वज्ञान
(૮)	~~पुरुष~~ पुरुष
(૯)	अनात्थ
(૧૦)	कठोळ
(૧૧)	निर्माण
(૧૨)	प्रशस्त
(૧૩)	कठोर
(૧૪)	पश्चाताप
(૧૫)	योग
(૧૬)	शंका
(૧૭)	श्रावण
(૧૮)	क्रियावादी
(૧૯)	अत्यगृद्ध
(૨૦)	जीवदया

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	सर्व व्यापक
(૨)	गुणवैभव
(૩)	श्यामारानी
(૪)	पाटा
(૫)	वायसा
(૬)	धीमे
(૭)	अनिपुण
(૮)	दान
(૯)	चंदनबाला
(૧૦)	पुष्पदंत
(૧૧)	अगुरुलघु
(૧૨)	एकेन्द्रिय जीव
(૧૩)	मिच्छामि दुक्कडं
(૧૪)	श्री शीतलनाथ
(૧૫)	चंडरुद्राचार्य
(૫)	जाते - आते
(૬)	रत्न
(૭)	उधई
(૮)	पुलकित
(૯)	प्रथम
(૧૦)	कातापना
(૧૧)	यश
(૧૨)	आज्ञा-दो (आणा)
(૧૩)	अंधकार
(૧૪)	तीर्थंकर पना
(૧૫)	मौनसे
(૧૬)	अलोसिया
(૧૭)	शल्यरहित
(૧૮)	विहायोगति
(૧૯)	इल्लिकाएं
(૨૦)	अनंतनाथ को

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	छींक आने से
(૨)	शाप करनेवाला
(૩)	कौडी
(૪)	सप्रदेशीपना

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	९	(૬)	२
(૨)	७	(૭)	३
(૩)	८	(૮)	१०
(૪)	६	(૯)	४
(૫)	१	(૧૦)	५

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	४८
(૨)	९२
(૩)	१८२४१२०
(૪)	४२
(૫)	२३
(૬)	२१
(૭)	४
(૮)	१६
(૯)	२८
(૧૦)	८

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ✗		પ્રશ્ન-૭ [illegible]
(૧)	✓	(૧)	६
(૨)	✓	(૨)	१८
(૩)	✗	(૩)	१३
(૪)	✗	(૪)	२१
(૫)	✓	(૫)	३
(૬)	✗	(૬)	१५
(૭)	✓	(૭)	११
(૮)	✓	(૮)	८
(૯)	✗	(૯)	१६
(૧૦)	✗	(૧૦)	१४

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	=	કુલ ગુણ

રીમાર્ક ____________ તપાસનારની સહી ____________

१) सुयोग्य पात्र में अन्नदान करने से २) सुयोग्य पात्र में पान (पानी) दान करने से
३) सुयोग्य पात्र को स्थान का दान करने से ४) सुयोग्य पात्र को शयन दान करने से
५) सुयोग्य पात्र को वस्त्र दान करने से ६) मन में शुभ विचारणा चिन्तन करने से
७) वचन में शुभ व्यापार - व्यवहार करने से ८) काया से शुभ व्यापार - व्यवहार करने से
९) देव - गुरु, उपकारी, बडों को नमस्कार करने से।

२) श्री अनंतनाथ दादा का परिवार

प्रभु के यश आदि पचास गणधरों सहित छासठ हजार साधु, बासठ हजार साध्वीयाँ, दो लाख छः हजार श्रावक और चार लाख चौदह हजार श्राविकाएँ थी। इतना परिवार अनंतनाथ दादा का था।

३) संघयण

जो उपवान है वह शुभ संघयणवाला भी होना चाहिए। संघयण याने हड्डियों की मजबूत रचना। शास्त्रों में छः प्रकार के संघयण बताये है।

१) वज्र ऋषभ नाराच संघयण २) ऋषभ नाराच संघयण ३) नाराच संघयण
४) अर्ध नाराच संघयण ५) कीलिका संघयण ६) सेवार्त संघयण

ऋषभ याने पाटा, वज्र याने किलीका अथवा खिला और नाराच याने मर्कट बंध.

४) ३ तस्स (उत्तरीकरण) सूत्र अर्थ

उनकी फिरसे शुद्धि करने के लिये प्रायश्चित - पाप का छेदन करने के लिये, आत्मा को ज्यादा शुद्ध करने के लिए शल्य रहित करने के लिए, पाप कर्मों का नाश करने के लिए, मैं कायोत्सर्ग का शरीर का व्यापार का त्याग करता हूँ। इरियावही के सूत्र से सामान्य शुद्धि और काउस्सग्ग से विशेष शुद्धि होती है। इसलिए विशेष शुद्धि के लिए यह सूत्र बोलकर काउस्सग्ग करने का विधान किया जाता है।

५) विदल

कच्चा दूध, दही, या छाश के साथ कठोल मिलने पर विदल होता है। उसमें भी बेइन्द्रिय जीव उत्पन्न होते है। धर्म के जानकार श्रावक श्राविकाओं ने विदल न हो इसकी सावधानी रखनी चाहिये।

१) खीचडी और कच्ची छाश न खायें २) मेथी के पत्ते वाले थेपले रोटी के साथ कच्ची छाश, दही नहीं वापरना ३) दाल भात के साथ कच्चा दही न डालना ४) दही बराबर गरम करके